महामान्या सुश्री एलेन जॉनसन सरलीफ राष्ट्रपति, लाइबेरिया गणराज्य द्वारा ''एक परिवर्तनकारी कार्यसूची के सामाजिक समावेशन आयाम'' विषय पर छठा बाबू जगजीवन राम स्मृति व्याख्यान

विज्ञान भवन, नई दिल्ली, भारत

12 सितम्बर, 2013

मैडम, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री;
बाबू जगजीवन राम प्रतिष्ठान के निदेशक मंडल की अध्यक्ष;
माननीय स्पीकर;
मंच पर विराजमान अन्य गणमान्य अधिकारीगण;
भारतीय तथा लाइबेरियाई सरकारों के अधिकारी;
विद्यार्थी;
गणमान्य देवियो और सज्जनो :

मैं, आपको स्वयं अपनी ओर से तथा लाइबेरिया की जनता की ओर से शुभकामनाएं देती हूं। हम भारत सरकार को अपने वास्तविक रूप से आश्चर्यजनक देश का दौरा करने के लिए निमंत्रण की हार्दिक सराहना करते हैं। हम भारत के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों की कद्र करते हैं और इस यात्रा के दौरान हमने विभिन्न करार संपन्न किए हैं जिनका उद्देश्य हमारे दोनों देशों और हमारे लोगों के बीच संबंधों को विस्तारित करने तथा गहन करना है।

हम ''एक परिवर्तनकारी कार्यसूची के सामाजिक समावेशन आयाम'' विषय पर आज का व्याख्यान देने के लिए बाबू जगजीवन राम प्रतिष्ठान को निमंत्रण देने के लिए धन्यवाद देते हैं। हम आज यहां केवल एक व्यक्ति के जीवन और कार्य के कारण मौजूद हैं। यह प्रतिष्ठा की बात है कि किसी व्यक्ति के चले जाने के बहुत पश्चात्, उसका जीवन और कार्य पीढ़ियों के जीवन को सवँरना जारी रखते हैं।

बाबू जगजीवन राम भारतीय समाज में एक दूरदृष्टा तथा सक्रिय भागीदार थे। उन्होंने यह देखा था कि भारत ने अन्य समाजों के समान आदतों, रिवाजों तथा परम्पराओं को संस्थागत रूप दिया था जिसने इसके कुछ सदस्यों को समाज के हाशिए पर रखा। उपेक्षित और बहिष्कृत लोगों की आवाज को नहीं सुना गया, उनके

लोगों के बीच संबंधों को विस्तारित करने तथा गहन करना है।

हम ''एक परिवर्तनकारी कार्यसूची के सामाजिक समावेशन आयाम'' विषय पर आज का व्याख्यान देने के लिए बाबू जगजीवन राम प्रतिष्ठान को निमंत्रण देने के लिए धन्यवाद देते हैं। हम आज यहां केवल एक व्यक्ति के जीवन और कार्य के कारण मौजूद हैं। यह प्रतिष्ठा की बात है कि

सकते थे; इसके बावजूद, जीवन में अधिकांशतः जहां वे जन्मे थे अथवा जहां उनके माता-पिता थे द्वारा पूर्वनिर्धारित था। बाबू जगजीवन राम इसे बदलना चाहते थे। एक अन्य नायक, मार्टिन लूथर किंग ने कहा था ''लोगों को उनकी चमड़ी के रंग से नहीं बल्कि उनके चरित्र से पहचाना जाना चाहिए''।

बाबू जगजीवन राम की भारतीय लोगों, उनकी संस्कृति और परम्पराओं में अडिग आस्था थी। उनका विश्वास था कि भारत बेहतर हो सकता है, भारतीय अतुल्य सौम्य और महानता में सक्षम हैं और कि भारतीय समाज उपेक्षितों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सौम्य होता। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए अभियान चलाया, पुस्तकें लिखी और उस प्रत्येक व्यक्ति से अनुनय-विनय किया जिन्होंने उन्हें सुना। उनका तर्क था कि भारतीय समाज भिन्न हो सकता था और कि भारतीय समाज न केवल कुछ के लिए एक मुक्त समाज के लाभ प्रदान करने में सक्षम था बल्कि सभी लोगों के लिए।

वह संस्था जो आज हमारी मेजवानी कर रही है उस कार्य को जारी रखे हुए है। भारतीय समाज की उसकी समस्याओं को पहचानने तथा सामूहिक रूप से उनका समाधान करने की ताकत और क्षमता में आस्था एक विधानस्वरूप है। बाबू जगजीवन राम उस कटुता के आगे नहीं झुके थे जो यह कहती थी कि ''हमारे लोग पीढ़ियों से यह करते आ रहे हैं''। उनका विश्वास था कि भारत भिन्न और बेहतर हो सकता है – कि किसी कार्य अथवा व्यवहार की नैतिकता वह कितने लम्बे समय से है अथवा कितने लोग इसका व्यवहार कर रहे हैं द्वारा निर्धारित नहीं होती है बल्कि किसी समाज की नैतिक ताकत उसके अत्यधिक संवेदनशील - बहिष्कृत, अनाथ, वृद्ध और विधवाओं – वे जो स्वयं इसके लिए लड़ने में असक्षम हैं द्वारा इसे कैसे व्यवहृत करते हैं, में आंकी जाती थी।

विश्व में हमारे सार्वभौमिक और राष्ट्रीय समाजों और हमारे स्थानीय समुदायों में बाबू जगजीवन राम की और अधिक आवश्यकता है। इन्हीं के समान, हमारी समस्याओं का आकार हमें बाधित अथवा भयभीत नहीं करें। विश्व के लिए भारत का यह विश्वास वरदान है कि समाज बेहतर होना चाहिए और बेहतर हो सकता था कि हमारे अपेक्षाकृत अधिक सार्वभौमिक समाज में सामूहिक सार्वजनिक वस्तुएं भारत में, अफ्रीका में, लैटिन अमेरिका में, एशिया में इसके सभी नागरिकों द्वारा बांटी जानी चाहिए।

मानव विकास सूचकांक पर एक नजर डालने से यह प्रदर्शित होता है कि शेष संसार ने मानवीय दशा सवाँरने में महान प्रगति की है जबकि प्रगति अफ्रीका में इतनी तेज नहीं हुई है। मातृत्व तथा बाल मृत्यु पर घटी है फिर भी ये पर्याप्त रूप से तीव्र नहीं हैं। स्वास्थ्य और सफाई की पहुंच विस्तारित हुई है फिर भी वांछित गति करने के लिए शेष है। हमारे लोगों की मानवीय दशा में धीमी वृद्धि समस्त महाद्वीप की सकल विकास प्रगति आंकड़ों में अभूतपूर्व वृद्धि के समय आयी है। जबकि जीडीपी समृद्धि ने औसत आय को आगे बढ़ाया है, सदैव इसके परिणामस्वरूप लोगों के जीवन में आनुपातिक सुधार नहीं हुआ।